Ch- माँग

1. माँग क्या है? माँग के निर्धारक तत्वों के नाम बताइए और उदाहरण सहित विस्तार से समझाइए।

माँग किसी वस्तु की वैसी प्रभावपूर्ण इच्छा को कहते हैं, जो एक निश्चित मूल्य पर, निश्चित समय पर एवं निश्चित स्थान पर की जाती है।

माँग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं—

i) वस्तु की उपयोगिता
Utility of the goods:— उपयोगिता का अभिप्राय है आवश्यकता पूर्ति की क्षमता, एक दी गई समयावधि में वस्तु की माँग का आकार इस बात पर निर्भर करता है कि मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति की वस्तु में कितनी क्षमता है? अधिक उपयोगिता वाली वस्तु की माँग अधिक होगी तथा इसके विपरीत कम उपयोगिता वाली वस्तु की माँग कम होगी।

ii) आय स्तर :
Income level:— आय स्तर का माँग पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, उपभोक्ता की आय जितनी अधिक होगी, उसकी माँग उतनी ही अधिक हो जाएगी तथा इसके विपरीत आय का कम स्तर माँग को कम कर देगा।

iii) धन का वितरण
Distribution of wealth:— समाज में धन के वितरण का भी माँग का प्रभाव पड़ता है, समाज में धन और आय का वितरण यदि असमान है तो धनी वर्ग द्वारा विलासिता की वस्तुओं की माँग अधिक होगी, जैसे-जैसे समाज में धन का वितरण समान होता जाएगा वैसे-वैसे समाज में आवश्यक एवं आरामदायक वस्तुओं की माँग बढ़ती जाएगी।

iv) वस्तु की कीमत
Price of the goods:— वस्तु की कीमत माँग को मुख्य रूप से प्रभावित करती है, कम कीमत पर वस्तु की अधिक माँग तथा अधिक कीमत पर वस्तु की कम माँग होती है।

v) रुचि, फैशन आदि
Taste, Fashion etc:— वस्तु की माँग पर उपभोक्ता की रुचि, उसकी आदत, प्रचलित फैशन

आदि का भी प्रभाव पड़ता है, किसी वस्तु विशेष का समाज में फैशन होने पर निश्चित रूप से उसकी माँग में वृद्धि होगी।

vi) भविष्य में कीमत परिवर्तन की आशा

Expected Future change in price:- सरकारी नियन्त्रण, दैवीय विपत्ति की आशंका, युद्ध सम्भावना आदि अनेक अप्रत्याशित एवं प्रत्याशित घटकों का भी वस्तु की माँग पर प्रभाव पड़ता है।

Q2. माँग का नियम क्या है?

~~माँग के नियम की क्रियाशीलता कुछ मान्यताओं पर आधारित है।~~ दूसरे शब्दों में

माँग का नियम वस्तु की कीमत और उस कीमत पर माँगी जाने वाली मात्रा के गुणात्मक सम्बन्ध को बताता है। उपभोक्ता अपनी मनोवैज्ञानिक प्रवृति के अनुसार अपने व्यावहारिक जीवन में ऊँची कीमत पर वस्तु की कम मात्रा खरीदता है और कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा उपभोक्ता की इसी मनोवैज्ञानिक उपभोक्ता उपभोग प्रवृति पर माँग का नियम आधारित है।

माँग का नियम यह बताता है कि 'अन्य बातों के समान रहने पर' वस्तु का कीमत एवं वस्तु की मात्रा में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है, दूसरे शब्दो में, अन्य बातों के समान रहने की दशा में किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी माँग में कमी हो जाती है तथा इसके विपरीत कीमत में कमी होने पर वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है।

स्पष्ट है कि स्थिर दशाओं में वस्तु की कीमत और वस्तु की माँग में एक विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।

अर्थात

$$P \propto \frac{1}{Q}$$

जहाँ, P = वस्तु की कीमत,
Q = वस्तु की माँग

उपर्युक्त समीकरण बताता है कि कीमत बढ़ने पर माँग घटेगी और कीमत घटने पर ~~सम्बन्ध पाया जाता है~~, माँग बढ़ेगी।

Q3. प्रतिस्थापन एवं पूरक वस्तुओं में अन्तर करें।

→ Substitutes
प्रतिस्थापन वस्तुएँ :- प्रतिस्थापक वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो एक दूसरे के बदले एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग की जा सकती हैं, उदाहरण के लिए, पेप्सी कोला और कोका कोला। प्रतिस्थापक वस्तुओं में से एक वस्तु की माँग तथा दूसरी वस्तु की कीमत में धनात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी प्रतिस्थापक वस्तु की माँग बढ़ती है तथा कीमत कम होने पर माँग कम होती है।

पूरक वस्तुएँ
Complementary goods :- पूरक वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो किसी आवश्यकता को संयुक्त रूप से सन्तुष्ट करती हैं जैसे- पेन और स्याही। अन्य शब्दों में पूरक वस्तुएँ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनमें एक वस्तु की माँग तथा दूसरी वस्तु की कीमत में ऋणात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूरक वस्तु की माँग कम हो जाएगी तथा कीमत कम होने पर पूरक वस्तु की माँग बढ़ जाएगी।

Scanned with CamScanner

Q4. "इच्छा" और "माँग" में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

→

इच्छा Desire	माँग Demand
वस्तुओं या सेवाओं की सामान्य चाहत जिसे पूरा करने के लिए मुद्रा न हो या उसे मुद्रा खर्च करने के लिए तैयार न हो उसे इच्छा कहते है, जैसे - चार्टर्ड प्लेन की इच्छा।	प्रभावशाली इच्छा जिसे पूरा करने के लिए मुद्रा खर्च करने हेतु तैयार हो उसे माँग कहते है, जैसे - रोटी, वस्त्र की माँग।

Q5. आर्थिक वस्तु और निःशुल्क वस्तु में अन्तर स्पष्ट करें।

→

आर्थिक वस्तु Economic goods	निःशुल्क वस्तु Free goods
1. आर्थिक वस्तु को प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता को श्रम तथा शुल्क देना पड़ता है।	निःशुल्क वस्तु को प्राप्त के लिए उपभोक्ता को कोई श्रम तथा शुल्क नहीं देना पड़ता है।
उदाहरण - खाना कपड़े और घर।	उदाहरण - हवा, पानी, काल आदि।
2.	

Scanned with CamScanner

Q6. माँग के नियम के अपवाद को विस्तार से समझाए,

कुछ दशाओ मे कीमत और माँग का प्रतिलोम सम्बन्ध क्रियाशील नही होता, ऐसी दशाओ को नियम का अपवाद कहा जाता है जो निम्नलिखित है_

i) भविष्य में कीमत वृध्दि की सम्भावना ;_ कुछ भावी प्रत्याशित परिस्थितियों के कारण जैसे - युध्द, अकाल, क्रान्ति, सरकारी नीति, सीमित पूर्ति जैसी सम्भावनाओ में कीमत वृध्दि के बावजूद माँग में उत्तरोत्तर वृध्दि होती चली जायेगी क्योंकि उपभोक्ता भविष्य में और कीमत वृध्दि की आशंका से वर्तमान में माँग को बढ़ा देगा, ऐसी दशा में कीमत और माँग में प्रतिलोम सम्बन्ध न होकर सीधा सम्बन्ध Direct Relation होता है और माँग वक्र बायें से दाये ऊपर की ओर चढ़ता हुआ बन जाता है,

ii) प्रतिष्ठासूचक वस्तुए ;_ प्रतिष्ठासूचक वस्तुओ में मिथ्या आकर्षण False Show के कारण माँग का नियम क्रियाशील नही होता समाज का धनी वर्ग अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए ऊँची कीमत वाली वस्तुओ का अधिक क्रय करता है, हीरे जवाहरात, बहुमूल्य आभूषण, कीमती कलाकृतियों आदि वस्तुओ की माँग पर कीमत परिवर्तन का प्रभाव नही पड़ता वास्तविकता तो यह है कि इन वस्तुओ की किमतों में जैसे जैसे वृध्दि होती जाती है, धनी वर्ग मिथ्या आकर्षण के वशीभूत होकर इन वस्तुओं की कमी भी बढ़ाता जाता है,

iii) उपभोक्ता की अज्ञानता ;_ जब उपभोक्ता अपनी अज्ञानता के कारण ऊँची कीमत देकर यह अनुभव करता है कि उसने अधिक टिकाऊ व श्रेष्ठ वस्तु खरीदी है तब ऊँची कीमत माँग को प्रभावित नही करती, इसके अतिरिक्त जब किसी वस्तु की कीमत घटाई जाती है तब उपभोक्ता अपनी अज्ञानता के कारण कम कीमत वाली वस्तु को घटिया समझकर उपभोग

नहीं करता, ऐसी दशा में कीमत घटने पर उपभोग अधिक होने के स्थान पर कम हो जाता है और माँग का नियम क्रियाशील नहीं होता,

iv) गिफिन का विरोधाभास :-

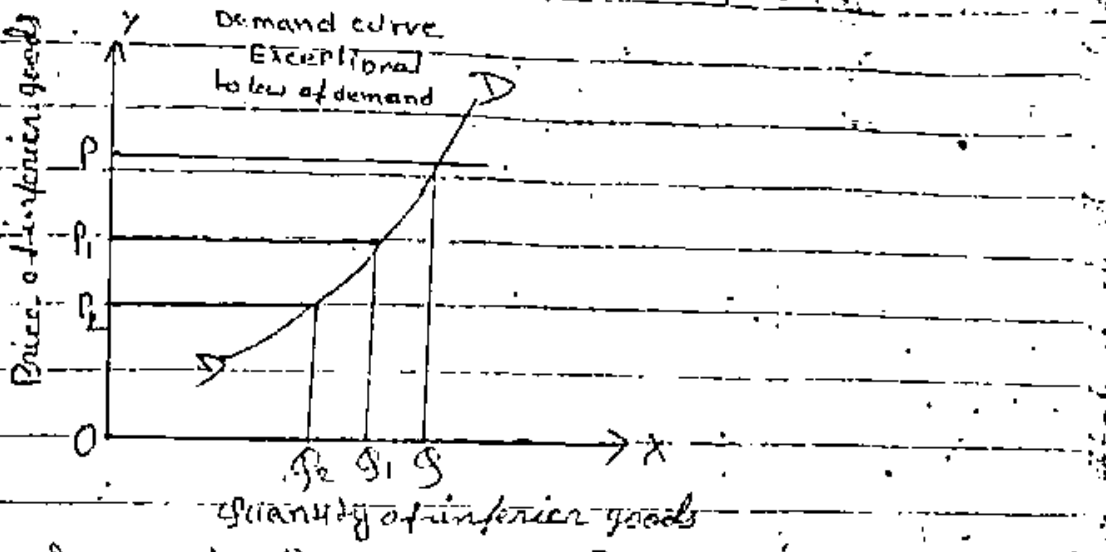

जब उपभोग की दो वस्तुओं में एक वस्तु घटिया वस्तु हो तथा दूसरी श्रेष्ठ वस्तु हो तब गिफिन का विरोधाभास उत्पन्न होता है, घटिया वस्तुएँ वे वस्तुएँ होती हैं, जिनका उपभोग उपभोक्ता द्वारा इसलिए किया जाता है क्योंकि उपभोक्ता अपनी सीमित आय और श्रेष्ठ वस्तु की ऊँची कीमत के कारण कम कीमत वाली वस्तु (अर्थात घटिया वस्तु) का उपभोग करता है, ऐसी दशा में घटिया वस्तु की कीमत में जब कमी होती है, तब उपभोक्ता कीमत के घटने के कारण संचित अतिरिक्त क्रय शक्ति से अच्छी वस्तु का उपभोग बढ़ा देता है तथा घटिया वस्तु का उपभोग घटा देता है, इस प्रकार घटिया वस्तु की कीमत में कमी होने पर उसकी माँग में कमी होती है, माँग के इस विरोधाभास की ओर सर्वप्रथम इंग्लैण्ड के अर्थशास्त्री रॉबर्ट गिफिन ने ध्यान आकृष्ट किया था, नामकरण उन्हीं के नाम पर इसे गिफिन का विरोधाभास के नाम से जाना जाता है, गिफिन विरोधाभास वाली घटिया वस्तु के माँग वक्र को उपर्युक्त चित्र में दिखाया गया है।

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त चित्र में DD घटिया वस्तु का मांग है जो बायें से दायें ऊपर की ओर बढ़ता हुआ है, OP कीमत पर उपभोक्ता घटिया वस्तु की OQ मात्रा क्रय करता है, जब उपभोक्ता की क्रय शक्ति में घटिया वस्तु की कीमत घटने (चित्र में OP से OP_1) से वृद्धि होती है, तब उपभोक्ता घटिया वस्तु का उपभोग OQ से OQ_1 तक घटाकर श्रेष्ठ वस्तु की ओर उपभोग बढ़ा देता है, दूसरे शब्दों में घटिया वस्तु की कीमत घटने पर पर उसकी मांग में कमी होती है, यही मांग के नियम का उपवाद है।

Q7. व्यक्तिगत मांग तथा बाजार मांग को विस्तार से समझाइए।

→ व्यक्तिगत मांग :—

i) यह किसी व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा एक दी गई अवधि में दी गई कीमत पर वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा है।

ii) व्यक्तिगत मांग में मांग का नियम लागू हो भी सकता है और नहीं भी यह सम्भावना हो सकती है कि उपभोक्ता ऊंची कीमत पर भी अधिक वस्तु की मांग करे।

iii) व्यक्तिगत मांग बाजार मांग को प्रभावित करने वाले सभी घटकों से प्रभावित नहीं होती।

बाजार मांग :—

i) यह सभी उपभोक्ताओं द्वारा एक दी गई अवधि में दी गई कीमत पर वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा है।

ii) बाजार मांग में मांग का नियम सदैव लागू होता है अर्थात कीमत के घटने पर मांग बढ़ती है एवं विलोमतः।

iii) बाजार मांग व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले सभी घटकों से प्रभावित होती है।

Scanned with CamScanner

उपभोक्ता वस्तु की अधिक इकाइयों का क्रय करेगा वैसे वैसे वह वस्तु की कम कीमत देगा अर्थात कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जायेगी, इसी प्रकार जब उपभोक्ता वस्तु की कम इकाइयों का उपभोग करता है तब कम वस्तु के कारण उसे ऊँची सीमान्त उपयोगिता मिलती है जिसके कारण उपभोक्ता ऊँची कीमत देने को तैयार करता है, दूसरे शब्दों में कम उपभोग के कारण ऊँची उपयोगिता उपभोक्ता को वस्तु की ऊँची की देने को प्रेरित करती है अर्थात ऊँची कीमत पर कम मात्रा क्रय की जाती है, यही माँग का नियम है जिसमें कीमत और माँगी गई मात्रा का विपरीत सम्बन्ध होता है

ii) आय प्रभाव :- वस्तु की कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय (अर्थात क्रय शक्ति) में वृद्धि होती है जिसके कारण उपभोक्ता को अपना पूर्व उपभोग स्तर बनाये रखने के लिए पहले की तुलना में कम व्यय करना पड़ता है, दूसरे शब्दों में वस्तु की कीमत में कमी होने के कारण उपभोक्ता पहले किये जाने वाले कुल व्यय में ही अब वस्तु की अधिक मात्रा खरीद सकता है, इस प्रकार वस्तु की कीमत में कमी होने पर वस्तु का अधिक क्रय सम्भव हो जाता है, यही माँग का नियम है, इसके विपरीत, वस्तु की कीमत वृद्धि के कारण उपभोक्ता की वास्तविक आय (अर्थात क्रय शक्ति) में कमी होती है, जिसके कारण वस्तु का उपभोग घट जाता है, यही माँग का नियम है

iii) प्रतिस्थापन प्रभाव :- वस्तु की कीमत एवं माँग के विपरीत सम्बन्ध (अर्थात ऋणात्मक सम्बन्ध) का कारण प्रतिस्थापन प्रभाव है जब एक ही आवश्यकता की पूर्ति दो या अधिक वस्तुओं से सम्भव होता है तब अन्य वस्तुओं की कीमतें स्थिर रहने की दशा में एक वस्तु की कीमत का परिवर्तन मूल वस्तु के उपभोग क्रम में इसलिए परिवर्तन कर देता है क्योंकि उपभोक्ता मूल वस्तु एवं स्थानापन्न वस्तु के प्रयोग अनुपात

इन घटिया वस्तुओं का उपभोग घटाकर श्रेष्ठ वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि करने लगता है अर्थात घटिया वस्तुओं के लिए आय माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला बाये से दाये नीचे गिरता हुआ होता है।

Q9. तटस्थता वक्र या अधिमान वक्र से क्या समझते हैं? और इसकी मान्यताओं को विस्तार से समझाइए।

'अधिमान' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'समान' होता है, अतः इसका अर्थ यह हुआ कि एक उपभोक्ता दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगो पर उनसे प्राप्त होने वाली संतुष्टि के बीच किसी प्रकार का कोई भेद नहीं करता है, अधिमान वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता द्वारा उपभोग की जाने वाली दो वस्तुएँ होती हैं अधिमान वक्र पर प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के जोड़े को दर्शाता है, पुनः विभिन्न बिन्दु विभिन्न जोड़ों को दर्शाते हैं, इन बिन्दुओं को मिलाकर ही अधिमान वक्र खींचा जाता है। इस प्रकार दो वस्तुओं के उन संयोगो को जिनसे एक उपभोक्ता समान संतुष्टि प्राप्त करता है, दिखाने वाला वक्र तटस्थता या अधिमान वक्र Indifference curve कहलाता है।
अधिमान वक्र या तटस्थता वक्र की विचारधारा निम्न मान्यताओं पर आधारित है—

i) उपभोक्ता विवेकशील होता है

Consumer is rational :- मार्शल की उपयोगिता विश्लेषण की तरह ही उदासीनता वक्र विश्लेषण में यह मान लिया जाता है कि उपभोक्ता विवेकशील होता है, हिक्स के अनुसार, "वस्तुओं के बाजार मूल्य तथा आय के दिए हुए स्तर पर, अपने उपयोगिता को अधिकतम करने के दृष्टिकोण से उपभोक्ता का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है।"

होती है, जैसे जैसे उपभोक्ता इन घटिया वस्तुओं का उपभोग घटाकर श्रेष्ठ वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि करने लगता है अतः घटिया वस्तुओं के लिए आय माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला बायें से दायें नीचे गिरता हुआ होता है।

11. माँग की तालिका तथा माँग के वक्र को समझाइए।

माँग तालिका :- (Demand Schedule) हम जानते हैं कि माँग और मूल्य में विपरीत सम्बन्ध होता है, माँग तालिका इसी सम्बन्ध के प्रस्तुतीकरण की सारणीयन विधि है, अतः किसी दिये हुए समय में भिन्न भिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की जितनी माँग की जाती है उसे प्रकट करने वाली अनुसूची माँग तालिका कहलाती है।

माँग वक्र :- माँग एवं मूल्य के बीच विपरीत सम्बन्ध के रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण को माँग वक्र कहते हैं। अथवा माँग तालिका को रेखाचित्रीय रूप में प्रस्तुत करने को ही माँग वक्र कहते हैं।

Scanned with CamScanner

होती है, वैसे वैसे उपभोक्ता इन घटिया वस्तुओं का उपभोग बढ़ाकर श्रेष्ठ वस्तुओं की उपभोग में वृध्दि करने लगता है अर्थात घटिया वस्तुओं के लिए आय मॉंग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला बायें से देखे नीचे गिरता हुआ होता है।

मॉंग की तालिका तथा मॉंग के वक्र को समझाइए।

मॉंग तालिका :— हम जानते हैं कि मॉंग और मूल्य में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, मॉंग तालिका इसी सम्बन्ध Demand Schedule के समीकरण की सारणीयन विधि है, अतः किसी दिये हुए समय में भिन्न भिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की जितनी मॉंग की जाती है उसे प्रकट करने वाली अनुसूची मॉंग तालिका कहलाती है।

मॉंग वक्र :— मांग एवं मूल्य के बीच कार्यगत सम्बन्ध को रेखागणितीय प्रस्तुतीकरण की मांग वक्र कहते हैं अतः मांग तालिका को रेखाचित्र द्वारा प्रस्तुत करने को ही मांग वक्र कहते हैं।

Scanned with CamScanner